भारतीय समाज में नारी की स्थिति

अमृता दास*

प्रत्येक समाज में नारी की स्थिति सदैव बदलती रहती है। भारतीय इतिहास पर दृष्ट्रिपात करने से यह तथ्य भली भाँति स्पष्ट हो जाता है कि नारी की समाज में बहुत उपेक्षा हुयी है।

प्राचीन भारत में हिन्दु नारी की स्थिति ना तो बहुत अच्छी थी और न ही बहुत हीन थी। प्राचीनतम ग्रन्थ वेदों–समवेदों में नारी का उल्लेख मिलता है। ऋग्वेद में नरी समाज की अवस्था का व्यापक परिचय मिलता है। इस ग्रन्थ में नारी की उच्चता का परिचय मिलता है। नारी को प्रकृति के रूप में समझा जाता था। शतपथ ब्राहमण, महाभारत, मनुस्मृति ग्रन्थों में स्त्री को अर्धांगिनी के रूप में स्वीकार किया गया है। गृहस्थि के समस्त कार्यो की देखभाल स्त्री ही करती थी। स्त्रियाँ पूर्णया पुरूषों के अधीन थी। मनु, शुक्राचार्य आदि नारी स्वत्रंता के विरोधी थे। विवाह एक धार्मिक संस्कार था, जो किसी अवस्था में भंग नहीं हो सकता था। विधवा विवाह की अनुमति तो थी। किन्तु उसे उचित नहीं समझा जाता था। वैदिक साहित्य में नारी स्वत्रंता थी, किन्तु धर्म शास्त्रों में नारी स्वत्रंता को अनुमति नहीं दी गयी है। स्त्री को सहधर्मिणी समझा जाता था। भारतीय संस्कृति के अधिष्ठाता मनु का कथन है–
''यत्र नार्यस्तु पूत्यन्ते रमन्ते तत्र देवता'' अर्थात नारी को अत्यन्त आदर की दृष्टि से देख जाता था। सुलभ, मंत्रीय गार्गी आदि के उल्लेखों से ज्ञात होता है कि उस समय स्त्रियाँ वाद–विवादों में भाग लेती थी।

स्मृति काल में धार्मिक कार्यो में स्त्री पुरूषों के अधीन हो गई। आगे चलकल या कार्य में पत्नी को साथ रखना आवश्यक हो गया। स्त्री शिक्षा का पर्याप्त प्रचार था। गार्गी, संघमित्रा आदि विदुषी महिलाओं का उल्लेख मिलता है। मनु की समाजिक व्यवस्था में स्त्री–शिक्षा का पतन होने लगा था। सार्वजनिक जीवन में स्त्री स्वतन्त्रता में भाग लेती थीं। दशरथ की पत्नी कैकेयी वीन नारी थी, जिसने देवासुर संग्राम में अपने रण–कौशल का परिचय दिया था। स्वयंवर प्रथा थी, जिससे उन्हें जीवन साथी चुनने की स्वतन्त्रता थी। आर्थिक दृष्टि से वे समर्थ थी।

मध्यकाल में स्त्रियों की स्थिति अत्यन्त हीन हो गई। बाल–विवाह प्रथा प्रचलित हो गई। विधवा विवाह घृणा की दृष्टि से देखा जाने लगा। विधवा को समाज में कहीं स्थान नहीं था। सती–प्रथा और जौहर प्रथा जैसी अमानुषिक प्रथाओं से विधवाओं की स्थिति अत्यन्त दयनीय हो गई। स्त्रियों को घरों की चारदिवारी में कैद रखा जाता था। धार्मिक कुरीतियों ने उन्हें और अधिक पतन के गर्त में ढकेल दिया। शिक्षा से उन्हें दूर कर दिया गया। सार्वजनिक जीवन से भी स्त्रियाँ दूर हो गई। आर्थिक क्षेत्र में भी वे पुरूषों के अधीन रही।

मध्ययुगीन स्त्रियों के पतनावस्था के अनेक कारण है। जब तक देश में शान्ति रही स्त्रियों की स्थिति अच्छी रही। किन्तु जब देश पर आक्रमण होने लगे तो स्त्रियाँ की स्थिति शनेः–शनेः पतन के गर्त में चली गई। नारी कोमलता, स्नेह, दया और ममता की सजीव मूर्ति थी। पुरूषों की अपेक्षा उसमें आत्म बलिदान और सेवा भाव अधिक होता है। फलतः वह पुरूष की दासी बनने की विवश हो गई। पुरूष ने उसकी इस भावना को गलत समझ कर उसे अपनी वासना पूर्ति का साधन माना। वह केवल गृह–कार्य और बच्चों का पालन करने वाली दासी बनकर रह गई। युद्धादि कारणों से पुरूषों की संख्या कम होनी लगी। इसलिए भी यह पुरूषों की चरणों की दासी बनने में अपना कल्याण समझने लगी। नारी को इस हीन दशा में पहुँचाने के लिए दो प्रमुख कारण पारिलक्षित होते है। अशिक्षा एवं आर्थिक पराधीनता। नारी शिक्षा से विलगकर दिया गया। इससे उसका वौद्धिक विकास रूक गया, और उसके सोचने समझने की शक्ति नष्ट हो गयी। यह पति को परमेश्वर समझती थी। उसकी प्रत्येक बात उसके लिए धर्म वाक्य थी, इसलिए यह पुरूष की आज्ञा मानना अपना धर्म समझती थी।

आर्थिक दासता भी उसकी हीनावस्था का मुख्य कारण है। स्त्री पूर्णयता पुरूषों पर आश्रित थी, क्योंकि अर्थव्यवस्था पुरूषों के हाथ में थी। आर्थिक विवशता के कारण वह पुरूषों के चंगुल से मुक्ति

* **राजनीतिशास्त्र विभाग, दी0द0उ0गो0वि0वि, गोरखपुर**

चाहते हुए भी उसका दामन नहीं छोड़ सकती थीं। इसके अतिरिक्त पर्दा प्रथा, स्त्री प्रथा, बाल विवाह, कन्या वध की प्रथाएं भी इस युग में प्रचलित हुई, जिससे हिन्दु नारी की स्थिति अत्यन्त दयनीय होती गयी। दहेज प्रथा के कारण विवाह भी बहुत कठिनाई से हो पाते थे। फलतः कन्या को दुःख का कारण समझा जाने लगा। इसलिए उसे जन्मते हुए मार दिया जाता था। अलमेल विवाह भी होने लगे, विधवा प्रथा तो कोढ बन गयी। इन्हीं सब कारणों से नारी की स्थिति दैनिक होती गई। वर्तमान काल संक्रमण या सन्धि का काल है। इस सयम सम्पूर्ण समाज एक अवस्था में पहुँचने की स्थिति में है। वर्तमान हिन्दु समाज में नारी की स्थिति निरन्तर सुधर रहीं है। समाजिक आर्थिक, धार्मिक, शैक्षणीक, राजनैनिक सभी क्षेत्रों में नारी की स्थिति में क्रान्तिकारी परिर्वतन हुए है। दहेज प्रथा और बाल विवाह का यद्यापि बहुत सुधार हुआ है। इसी प्रकार विधवा विवाह को भी समाज में पूर्ण रूप से स्वीकार नहीं किया गया है। यद्यपि उन्हें तलाक और पुनर्विवाह का अधिकार मिल गया है। भारत सरकार ने धर्म निरपेक्ष राष्ट्र की कल्पना कर ली है। किन्तु धार्मिक रूढिता में कोई परिर्वतन नहीं हुआ है। आज नारी पुरूषों के समान उच्च शिक्षा ग्रहण करने लगी है। स्त्री में आशतीत हुई है। आजकल प्रत्येक राजनीतिक दल में स्त्रियाँ सक्रिय हिस्सा लेती है। वे पुरूषों से पीछे नहीं है। स्त्रियों की आर्थिक स्थिति आज भी दयनीय है। यद्यापि उनके लिए सरकारी नौकरीयों के सभी द्वारा खोल दिये गए है। स्त्री धन सम्बन्धी अधिनियम भी बना दिए गए है। तथापि वे अभी भी पराश्रित है। किन्तु लाखों स्त्रियाँ आर्थिक दुष्टि से आत्मनिर्भर है। अतः भारत की भावी नारी समाजशास्त्री उत्तरोत्तर मानसिक विकास करेगी, पुरूषों के समान संस्कार के विविध क्षेत्रों में कार्य करेगी, आर्थिक दृष्टि से आत्म निर्भर होगी, पुरूषों की दासी नहीं रहगी, और अबला से सबला होगी, उसकी प्रगति के चरण मानवता की ओर बढेगें उसके विकास की गति कल्याण की ओर उन्मुख होगी। वह डॉ0 राधाकुष्णन के इस कथन को सार्थक करेगी कि नारी माता के रूप में वर्तमान अवस्था के औचित्य और अन्याय के प्रति अधिक प्रत्यक्ष रूप में संवेदनशील होती है, और आत्मा में अधिक प्रागढ़ और अधिक स्थायी परिर्वतन ला सकती हैं, और इसे नयी जीवन शैली में परिणत कर सकती है। तब नये मानव का जन्म होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. रस्तोगी, सीताराम : *इकोनामिक स्टेट्स एण्ड फेरटिलीटी : ए स्टडी ऑफ द हरिजन इन मीरजापुर* लखनऊ यूनिवर्सिटी, लखनऊ, 1977–78।
2. भारद्वाज, ए0एन0 : *दि प्राब्लम्स ऑफ शिडयूल्ड कास्टस एण्ड शिड्यूल्ड ट्राब्स इन इण्डिया,* लाइट एण्ड लाइफ पब्लिकेशन्स, 1979।
3. डिसूजा : *एजमकेशनल इनक्वलीजिट एमंग शिड्यूल्डः ए केस सटडी एन पंजाब,* पंजाब यूनिवर्सिटी, चढ़ीगढ़, 1990।
4. सिंह, आर0पी0 : *रूरल मार्डनइजेशनः ए स्टडी ऑफ कन्ट्राडिक्शन एण्ड चेन्ज इन टू विलेजज ऑफ ईस्टर्न उत्तर प्रदेश,* शोध–प्रबन्ध, जे0एन0यू0, 1980।
5. घोष, एस0के0 : *प्रोटेक्शन ऑफ माइनार्टिरीज एण्ड शिड्यूल्ड कास्ट्स,* आशीष पब्लिशिग हाउस, नई दिल्ली, 1930।
6. राम, जगजीवन : *कास्ट चैलेन्ज इन इण्डिया,* विजन बुक्स, दिल्ली, 1980।
7. अल्कारा, जेगबः *शिडयूल्ड कास्ट एण्ड हाटर एजूकेशन : ए स्टडी ऑफ कालेज स्टूडेन्ट इन बाम्बें,* वास्टाने, पूना 1980।
8. मुकजी, ए0बी0 : *द चमारास ऑफ उत्तर प्रदेश : ए स्टडी इन सोशल ज्योग्रॉफी,* इण्टर इण्डिया पब्लिशर्स, दिल्ली 1980।
9. त्रिपाठी, सत्येन्द्र : *दी रोल ऑफ बैंकर्स इन अपलिफ्टमेंट ऑफ रूरल पुवर अनक्लीयर आई0आर0जी0पी0,* शोध–प्रबन्ध, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, 1984।
10. गुप्ता, एस0के0 : *द शिड्यूल्ड कास्ट इन मार्डन इण्डिया पॉलिटिक्स : देयर इमरजेन्सी,* एस0ए0 पॉलिटिकल पावर मुंशीराम मनोहरलाल, नई दिल्ली – 1985।
11. शर्मा, एस0के0 : *दि चमार आर्टिसिशनस : इण्डिस्ट्रीलाइजेशन, सकील्स एण्ड सोशल मोबिलिटी,* बी0आर0 पब्लिशिंग कारपोरेशन, 1986।
12. कंसीरसागर, आर0के0 : *अनटचब्लिटी इन इण्डिया,* दीप एण्ड दीप पब्लिकेशनस नई दिल्ली, 1989।